प्रथम अध्याय

शोध परिचय

अध्याय–प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन समाज में ही रहकर सफल हो सकता है। काव्यादर्श में कहा गया है ''व्यक्ति शब्द रूपी ज्योति अर्थात् भाषा का प्रकाश न होता तो तीनों लोक अंधकारपूर्ण होते।'' व्यक्ति के हृदय में जो विचार एवं भाव उत्पन्न होते हैं उसे वह किसी न किसी रूप में अपने साथियों एवं सहयोगियों को व्यक्त करना चाहता है। भाषा ही एक मात्र साधन है जिसके माध्यम से हम अपने भावों एवं विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। अर्थात् अभिव्यक्ति का मूलाधार भाषा है। भाषा मानव मुखोच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके सहारे समाज विशेष के लोग आपस में विचार करते हैं। व्यक्ति द्वारा अपने तथा समाज के लिए जो रचना की जाती है वह उसकी रचना का परिचायक है। भाषा का उद्देश्य समाज का चिन्तन करना, हित–अहित को समझना तथा उसे उपयोगी बनाना चाहिए। मानव एवं भाषा दोनों एक दूसरे के पूरक है। अभिव्यक्ति मनुष्य जीवन में विशिष्ट रूप से पायी जाती है। रचनात्मकता के द्वारा हम उसे सौम्य एवं सुग्राहय बना सकते हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा शिक्षण की स्थिति ठीक नहीं है। भाषा का मौलिक स्वरूप विलुप्त होता जा रहा है। भाषा को मात्र पाठ्यक्रम का विषय मानकर पढ़ाया जा रहा है। भाषा शिक्षण की इस प्रक्रिया में छात्र मात्र एक स्त्रोता बनकर ही रह जा रहा है। जो पूर्ण रूप

से निष्क्रिय सा हो गया है। कक्षा पूर्ण रूप से शिक्षक केन्द्रित होती है। शिक्षक स्वयं को ध्यान में रखकर निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाता है, जिससे छात्रों को उबनसी हो जाती है और छात्रों का पढ़ने का उत्साह शिथिल हो जाता है। अन्य विषयों को पढ़ने में भाषा को पढ़ाते समय आवाज में आरोह-अवरोह का क्रम भी होना चाहिए। भाषा शिक्षकों को और विद्यार्थियों को सृजनात्मकता से जोड़ने की आवश्यकता है, जिससे भाषा शिक्षण के भाषा का विकास हो और मानव जीवन की उन्नति हो सके। जब भाषा का विकास नहीं हुआ था तब मनुष्य संकेतो से अपना काम चलाता रहा होगा, मानव शक्ति के क्रमिक विकास के साथ उसकी वाणी को नया रूप मिलता गया। रचनात्मकता की प्रवृत्ति ने उसके विकास में सहयोग दिया। भाषा सामाजिक है इस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है। भाषा सृजनशील है और इसे सृजनात्मकता के माध्यम से अधिक से अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है, भाषा के माध्यम से लेखक या वक्ता परिस्थिति को आवश्यकतानुसार नित्य नया आयाम देता है। जिससे नये-नये अर्थ निकलते हैं।

1.2 भाषा की परिभाषा एवं महत्व :-

शास्त्रीय अर्थ में विचार की अभिव्यक्ति के लिए किसी समाज द्वारा स्वीकृत जिन ध्वनि संकेतों का व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं। मारियों ए.पेई ने कहा है "भाषा की कहानी सभ्यता की कहानी है।" भाषा की परिभाषा विद्धानों ने अलग-अलग दी है। जिसमें से कुछ निम्न प्रकार है:-

महर्षि पंतजलिः- "व्याक्ता वाचि वर्ण येषां तं हमें व्यक्त वाच" अर्थात् भाषा वह व्यापार है जिसमें हम वर्णात्मक अथवा व्यक्त शब्दों के द्वारा विचारों को प्रकट करते हैं।[1]

1. हिन्दी शिक्षण "रमण बिहारी लाल" पृष्ठ संख्या-3

सुमित्रा नंदन पंथः– "भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व के हृदयतंत्री का विकास है।[1]

स्वीट महोदयः– "ध्वनियों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति भाषा है।[2]

भोलानाथ तिवारी :– "भाषा, उच्चारण-अवयवों से उच्चारित, यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज-विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।[3]

1.3 हिन्दी भाषा शिक्षण का पाठ्य क्रम में स्थान :–

हिन्दी को समूचे राष्ट्र की वाणी बनने का गौरव प्राप्त है। भारत माता के माथे की बिन्दी, यह हिन्दी राष्ट्रीयता का मापदण्ड है। अनेक वर्षो से हिन्दी प्रेम स्वदेश प्रेम का अभिन्न अंग माना जाता है, और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी में रचनात्मक कार्यो में हिन्दी प्रचार को प्रमुख स्थान दिया था। हिन्दी की सेवा राष्ट्र की सेवा है। हिन्दी के माध्यम से ही राष्ट्रीयता का साक्षात् दर्शन संभव है। भारतीय संविधान में हिन्दी की राष्ट्रव्यापी स्थिति को स्वीकार करके लोकतंत्र में अपनी आस्था व्यक्त की हैं। हिन्दी को राज-काज की भाषा बनाने का कार्य केवल संविधान का नहीं है अपितु उसका सर्वाधिक दायित्व शिक्षित समाज पर है।

---

1. सरल हिन्दी-भाषा-शिक्षण "डॉ. सत्यनाथ दुबे 'शरतेन्दु' "पृष्ठ संख्या-5
2. हिन्दी शिक्षण "रमन बिहारी लाल" पृष्ठ संख्या-3
3. भाषा विज्ञान "भोलानाथ तिवारी" पृष्ठ संख्या-4

1.4 शिक्षा की राष्ट्रीय नीति (1968) :–

हिन्दी के विकास का प्रयास हर संभव किया जाना चाहिए। संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का विकास करते समय इस बात का समुचित ध्यान रखना चाहिए कि यह भाषा संविधान के अनुच्छेद 351 के उपबन्धों के अनुसार भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकेगी। अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने वाले कॉलेजों तथा उच्चतर शिक्षा की अन्य संस्थाओं को स्थापित करने के प्रयत्नों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

1.5 हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य:–

- ❖ छात्रों में सौन्दर्यानुभूति का विकास करते हुए इस पाठों में अधिक रूचि लेने के लिए तैयार करना।
- ❖ छात्रों को व्याकरण का उच्च ज्ञान प्रदान करना।
- ❖ निबंध, पत्र संवाद, सारांश आदि में लेखन की योग्यता प्रदान करना।
- ❖ लेखन के गुढ़ विचारों को समझने की योग्यता प्रदान करना।
- ❖ मौखिक और लिखित भाषा के माध्यम से बोध ग्रहण क्षमताओं का विकास करना।
- ❖ मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति की कुशलताऐं प्रदान करना।
- ❖ मातृभाषा का विश्लेषण करने में तथा उसके शुद्ध एवं प्रभावशाली प्रयोगों में समर्थ बनाना।
- ❖ मौखिक एवं लिखित विभिन्न विधियों एवं शैलियों का ज्ञान करना एवं उनके प्रयोगों की योग्यता का विकास करना।

- ❖ मातृ भाषा के प्राचीन एवं नवीन साहित्य में प्रवेश करना तथा प्रमुख कवियों लेखकों व काव्य धाराओं का संक्षिप्त परिचय कराना।
- ❖ छात्रों की सौन्दर्यानुभूति और सृजनशीलता का विकास करना।
- ❖ चिन्तन की योग्यताओं का विकास करना। छात्रों को अपने व्यक्तित्व जीवन में मानसिक, बौद्धिक व सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उसका हल खोजने में समर्थ बनाना।
- ❖ भारतीय संस्कृति का परिचय कराना एवं छात्रों में सांस्कृतिक चेतना जगाना।
- ❖ पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त साहित्य पढ़कर एवं ज्ञानार्जन एवं मनोरंजन करने में समर्थ बनाना।

हिन्दी भाषा शिक्षण में सृजनात्मकता विकसित करना भी एक प्रमुख कारण है।

सृजनात्मक उद्देश्य का तात्पर्य यह है कि छात्रों में साहित्य सृजन की प्रेरणा देना और उन्हें रचना में मौलिकता लाने की योग्यता का विकास करने के लिये प्रेरित करना। इस कार्य के लिये निंबंध, कहानी, संवाद, उपन्यास, पत्र एवं कविता को माध्यम बनाया जा सकता है। इसके शिक्षण के समय छात्रों को मौलिकता लाने की प्रेरणा दी जा सकती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये छात्र से जिन योग्यताओं की अपेक्षा है वे अपने आप में महत्वपूर्ण है।

भाषा शिक्षण का एक उद्देश्य है छात्रों में सृजनात्मकता का विकास करना। सृजनात्मकता का हिन्दी भाषा से घनिष्ट संबंध है। सृजनात्मकता का संबंध विचारों एवं भावों से है। जिसकी उन्नति, प्रसार व प्रदर्शन हेतु भाषा एक माध्यम का कार्य करती है। सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति भाषा

है। सृजनात्मकता का आधार है कल्पना जो भाषा के द्वारा उड़ाने भरती है।

1.6 सृजनात्मकता की परिभाषा :–

सृजनात्मकता का आशय मानव की अदभुत योग्यता एवं शक्ति के उस विषय से है जो मानव से नित्य नव निर्माण करवाती है, एवं जटिल समस्याओं का समाधान ढूँढने तथा जीवन साकार बनाने में मानव की सहायता करती है, सृजनात्मकता की परिभाषा विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से दी है। जिसमें से कुछ अग्र लिखित है –

स्टीन महादेय – यदि किसी प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप कोई नवीन कार्य संपन्न होता है और समाज उसे लाभकारी एवं संतोषजनक समझकर स्वीकार कर लेता है तो वह प्रक्रिया अवश्य ही सृजनात्मक होगी।[1]

लिएनः– सृजनात्मकता किसी नवीन वस्तु का निर्माण एवं प्रणयन करने का सामर्थ अथवा क्षमता है।[2]

बैरन :– सृजनात्मकता का सार पहले विद्यमान वस्तुओं एवं तत्वों को मिलकर नये योग बनाना।[3]

सिम्पसन महोदय :– पारम्परिक विचार श्रृंखला से परे हटकर एक विभिन्न ढांचे के अनुसार सोचना सृजनात्मकता चिन्तन अथवा सृजनात्मकता है। उनके विचार में जिज्ञासा, उत्सुकता, कल्पना, खोज, नवीन अविष्कारी आदि योग्यतायें सृजनात्मकता की चर्चा में महत्वपूर्ण हैं।[4]

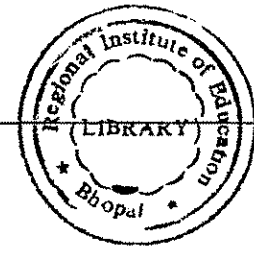

1. आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण + मापन 'महेश भार्गव' पृष्ठ संख्या– 333
2. – वही, पृष्ठ संख्या–333
3. – वही, पृष्ठ संख्या–334
4. अधिगमकर्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया 'बी.एन.शर्मा' पृष्ठ संख्या–423

ई.पाल टोरेन्स :– सृजनात्मक चिंतन रिक्तताओं, त्रुटियों तथा अप्राप्त एवं अक्षम्य तत्वों को समझने अनेक विषय में धारणायें तथा अनुमान लगाने, धारणाओं का परीक्षण करने, परिणामों को दूसरों तक पहुँचाने तथा धारणाओं का पुनः परीक्षण करके उसमें सुधार करने की प्रक्रिया है।[1]

जे.ई.ड्रेल्हल :– सृजनातमकता मानव की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह कोई नवीन रचना करता है अथवा नवीन विचार प्रस्तुत करता है।[2]

1.7 सृजनात्मकता के घटक –

1. **प्रवाह** :– जिसका संबंध विचारों की उत्पत्ति की दर से है। प्रवाह का अर्थ है सहज गति से अनेकानेक विचारों का आना।
2. **विविधता** :– विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये प्रत्युत्तरो या विकल्पों में विविधता के होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्प या उत्तर एक दूसरे से कितने भिन्न-भिन्न है।
3. **मौलिकता** :– मौलिकता से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा दी गई असामान्य अनुक्रियाओं से है। कार्य सम्पादन में नवीनता या कार्य सम्पादन प्रक्रिया जो सामान्य ना हो।
4. **विस्तारण** :– किसी एक दिशा में बहुत गहराई तक पहुँचना विस्तारण कहलाता है। किसी मूलभूत विचार के संप्रेक्षण में जितनी व्याख्या या विवेचन आवश्यक हो उससे अधिक विचार की क्षमता रखना।

---

1. आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण + मापन 'महेश भार्गव' पृष्ठ संख्या– 334
2. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान "डॉ. एस.पी. गुप्ता, डॉ. आलका गुप्ता" पृष्ठ संख्या–414

1.8 सृजनात्मकता तथा भाषा में संबंध :–

मानव जीवन में सृजनात्मकता उपयुक्त प्रगति का माध्यम है। सुजनात्मकता का क्षेत्र असीमित है। यह हर क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखा सकती है। पहले विद्यमान वस्तुओं, गुणों, तत्वों को मिलाकर सृजनात्मकता होती है जिससे एक नयी वस्तु का सृजन होता है।

भाषा और सृजनात्मकता मिलकर एक ऐसे विकास के पथ पर अग्रसित हो सकते हैं। भाषा की त्रुटियों को सृजनात्मकता के माध्यम से दूर किया जा सकता है तथा उसमें नवीन समावेश किया जा सकता है सृजनात्मकता का संबंध भाषा एवं भावों से है जो हिन्दी भाषा की विभिन्न विधाओं में साफ दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार यह पूर्ण सत्य है कि भाषा एवं सृजनात्मकता में घनिष्ठ सार्थक संबंध है।

1.9 शिक्षक की भूमिका :–

शिक्षक को अपने शिक्षण में ऐसे अवसर उत्पन्न करने चाहिए जहाँ छात्र स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त कर सके। इसके अतिरिक्त विशेष गतिविधियों को भी स्थान देना चाहिए जैसे विषय संबंधी अन्वेषक ब्रेन, नवीन पुस्तकों का पठन, क्रॉसवर्ड कम्प्यूटर ग्राफिक्स, ब्रेन स्टॉर्मिंग समस्यात्मक प्रश्नों का हल, हल को सुलझाने के पश्चात् पुनः विचार में हल नवीनता लाने के प्रयास, किसी विशिष्ट बिन्दु पर स्वतंत्रता पूर्वक चर्चा इत्यादि। तात्पर्य यह है कि कक्षा अनुदेशन की परम्परागत विधि के साथ–साथ शिक्षण में कुछ नवीनता लानी चाहिए। तभी सृजनात्मकता के लिए पोषक वातावरण स्थापित हो सकेगा।

1.10 शोध की आवश्यकता :–

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक विकास के आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत नित प्रतिदिन नूतन अविष्कार हो रहे हैं। इनमें

से अधिकांश अविष्कारों के पीछे जहाँ वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम छिपा है वहीं उनकी सृजनात्मकता का योगदान कम नहीं है। पहले यह माना जाता था कि केवल लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार आदि व्यक्ति ही सृजनात्मक होते हैं परन्तु अब यह माना जाने लगा है कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति हो सकती है। वास्तव में संसार के समस्त प्राणियों में सृजनात्मकता पाई जाती है। किसी व्यक्ति में कम मात्रा में सृजनात्मकता होती है तथा किसी व्यक्ति में अधिक मात्रा में सृजनात्मकता होती है। सृजनात्मकता जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

आज के समस्याग्रस्त तथा जटिल समाज तथा प्रतियोगितापूर्ण संसार में सृजनात्मक व्यक्तियों की अत्यंत मांग है। इसलिए स्कूल के बच्चों की सृजनशीलता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। सृजनशील विद्यार्थी होसियार होते हैं। सृजनशीलता बढ़ाने से उनका संर्वागीण विकास हो सकता है। इसलिए शिक्षा में सृजनात्मकता को महत्व देना जरूरी है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन करना जरूरी है।

1.11 समस्या कथन :–

"कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता एवं हिन्दी में उपलब्धि का अध्ययन"

1.12 क्रियात्मक व्याख्या :–

भाषा सृजनशीलता :–

छोटी सी घटना को अपनी कल्पना के आधार पर विकसित करके उसे कहानी या उपन्यास के रूप में ढालकर लिपिबद्ध करना भाषा सृजनशीलता है।

वस्तुतः मनुष्य द्वारा बोला या लिखा जाने वाला प्रत्येक वाक्य नया वाक्य होता है। सम्प्रेषण के समय मनुष्य हर बार नए वाक्य का निर्माण करता है इसे ही भाषा की सृजनशीलता कहा जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि :–

शैक्षिक उपलब्धि के मापन का मुख्य उद्देश्य यह है कि छात्र ने किस अंश तक विद्यालय द्वारा निश्चित किये गये उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है, उनकी जानकारी देना वह जानकारी आँकड़ों मात्रा एवं श्रेणी में व्यक्त की जाती है।

1.13 प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपालब्धि का अध्ययन करना।
3. छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।
4. छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना।

1.14 प्रस्तुत अनुसंधान की परिकल्पनाएँ :–

1. छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

4. छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

5. विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

1.14 प्रस्तुत अनुसंधान की मर्यादाएँ :–

1. अध्ययन अहमदनगर जिले के एक ही तहसील तक सीमित रखा गया है।

2. अध्ययन दो विद्यालय तक सीमित रखा गया है।

3. अध्ययन कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

4. अध्ययन 80 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।